आभूषणों की झंकार क्या है?

क्या है?

छोटे-छोटे घुँघरू या घंटियाँ, जिन्हें परंपरागत रूप से पैरों, हाथों या गले में बाँधा जाता है, उन्हें ही “झंकार करने वाले आभूषण” कहा जाता है। यह अक्सर बच्चों, सांस्कृतिक नृत्य करने वालों और ऊँट व घोड़े जैसे जानवरों पर बाँधे जाते हैं। जब इन्हें पहनने वाला चलता या नृत्य करता है, तो मधुर झंकार की ध्वनि निकलती है। ये सजावटी भी होते हैं और उपयोगी भी। बाइबिल के समय में भी ऐसे घंटियों का प्रयोग धार्मिक वस्त्रों और जानवरों पर किया जाता था।

1. यशायाह 3:16–17 – घुँघरू अभिमान और न्याय का प्रतीक

“यहोवा कहता है: क्योंकि सिय्योन की कन्याएँ घमण्ड करती
हैं, ऊँचे गले से चलती हैं, आँखें मटकाती हैं, छोटे-छोटे
क़दम रखती और पायल खनखनाती हुई चलती हैं। इसलिए प्रभु उनके सिरों पर घाव लगाएगा और उनकी चोटी को गंजा करेगा।” (यशायाह 3:16–17)

यहाँ झंकार करने वाले आभूषण (घुँघरू) घमण्ड और व्यर्थ अभिमान का प्रतीक हैं। बाहर की सजावट उनके अंदर के अभिमान और घमण्ड को

दर्शाती थी। परमेश्वर का न्याय यह था कि वह इस घमण्ड को दूर करे, यह दिखाने के लिए कि बिना धार्मिकता के बाहरी सौंदर्य या रीति-रिवाज़ व्यर्थ हैं।

2. जकर्याह 14:20 – घुँघरू पवित्रता के साधन के रूप में

“उस दिन घोड़ों की घंटियों पर लिखा होगा: यहोवा के लिये
पवित्र। और यहोवा के भवन के हांडी भी वेदी के सामने के
पवित्र कटोरों के समान होंगी।” (जकर्याह 14:20)

यशायाह के विपरीत, यहाँ घुँघरू पवित्रता का प्रतीक हैं। यहाँ तक कि साधारण वस्तुएँ—जैसे घोड़ों की घंटियाँ—पर भी लिखा होगा “यहोवा के लिये पवित्र,” यह दर्शाते हुए कि समय आएगा जब जीवन की हर बात परमेश्वर की महिमा के लिये समर्पित होगी।

3. निर्गमन 28:33–36 – महायाजक के वस्त्र पर घंटियाँ

“तू उसके चारों ओर नीले, बैंगनी और लाल धागे से दाड़िम और उनके बीच में सोने की घंटियाँ लगाना। एक सोने की घंटी और एक दाड़िम, फिर एक सोने की घंटी और एक दाड़िम उसके चारों ओर

उसकी झूल में हों। और जब हारून सेवा करने को पवित्र स्थान
में आए और निकले तो उसकी ध्वनि सुनी जाए ताकि वह न मरे। और तू शुद्ध सोने की एक पटिया बना और उस पर मुहर की नाईं खुदवाना: यहोवा के लिये पवित्र।” (निर्गमन 28:33–36)

यहाँ घंटियाँ केवल सजावट नहीं थीं, बल्कि कार्यकारी और पवित्र उद्देश्य से थीं। जब महायाजक परमपवित्र स्थान में प्रवेश करता, तो घंटियों की आवाज़ से उसकी उपस्थिति जानी जाती। यह आवाज़ परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर गति और उसके पवित्रता के प्रति आदर को दर्शाती थी। बिना इस ध्वनि के याजक मर भी सकता था।

घंटियों का अर्थ

1. उपस्थिति और उत्तरदायित्व का प्रतीक

जिस प्रकार घंटियों से जानवरों या लोगों की गति का पता चलता है, उसी प्रकार आत्मिक दृष्टि से वे हमें याद दिलाती हैं कि परमेश्वर हमारे हृदय की दशा को जानना चाहता है। जब हम आत्मिक रूप से सक्रिय और विश्वासयोग्य होते हैं, तो हम परमेश्वर की उपस्थिति में “आवाज़ करते” हैं। लेकिन आत्मिक चुप्पी मृत्यु या उसकी इच्छा से दूर होने का संकेत हो सकती है।

“मैं तेरे आत्मा से कहाँ जाऊँ? मैं तेरे साम्हने से कहाँ भागूँ?” (भजन संहिता 139:7)

2. आराधना और स्तुति का प्रतीक

अनेक परंपरागत संस्कृतियों में घंटियों का प्रयोग नृत्य और संगीत में होता है। बाइबिल में भी वे हर्षपूर्ण आराधना का प्रतीक हैं।

“जिस-जिस में श्वास है वह यहोवा की स्तुति करे।” (भजन संहिता 150:6)

एक विश्वासयोगी जो “परमेश्वर की घंटियों” से सुसज्जित है, वह अपने जीवन द्वारा निरंतर आराधना करता है और प्रभु का आदर करता है।

3. पवित्र आत्मा द्वारा पवित्रता के लिए बुलाहट

“यहोवा की घंटियाँ पहनना” प्रतीकात्मक रूप से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना है। केवल जब हम आत्मिक रूप से जीवित और आत्मा द्वारा पवित्र किए गए होते हैं, तभी हम वास्तव में पवित्रता को प्रतिबिंबित कर सकते हैं और परमेश्वर की उपस्थिति में सुने जाते हैं।

“और दाखमधु से मतवाले न बनो, क्योंकि उसमें लुचपन होता है;
पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।” (इफिसियों 5:18)

“यदि हम आत्मा के द्वारा जीवन पाते हैं तो आत्मा के अनुसार चलें।” (गलातियों 5:25)

क्या हम परमेश्वर की घंटियाँ पहने हुए हैं?

जिस प्रकार महायाजक परमेश्वर की पवित्र उपस्थिति में घंटियाँ पहनकर जाता था, उसी प्रकार हमें भी आत्मिक रूप से तैयार होना चाहिए—पवित्र आत्मा से परिपूर्ण और समर्पित—ताकि हम अपने जीवन से परमेश्वर का आदर और महिमा कर सकें।

अपने आप से पूछें:

क्या मैं आत्मिक रूप से परमेश्वर की उपस्थिति में “आवाज़” कर रहा हूँ?
क्या मेरा जीवन स्तुति और पवित्रता का प्रतिबिंब है?
क्या मैं पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हूँ?

शालोम – जब आप आत्मा के अनुसार चलते हैं, तो शांति आपके साथ हो।

Share on:
WhatsApp